A 513/V

Final Year B.A. Examination, May/June 2010
OPTIONAL HINDI (Group – II) (Paper – V)
Revised SIM Scheme (Medieval Poetry)
Texts : लंकाकाण्ड (रामचरितमानस) और मध्यकालीन हिन्दी काव्य

Time : 3 Hours Max. Marks: 90

SECTION – A

I. लंकाकाण्ड का सार लिखते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **15**

अथवा

लंकाकाण्ड में वर्णित अंगद–रावण संवाद की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

II. लंकाकाण्ड के आधार पर सुग्रीव तथा विभीषण की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। **15**

अथवा

किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

अ) कुम्भकर्ण आ) नल और नील

इ) सेतुबन्ध ई) तुलसीदास

SECTION – B

III. पठित साखियों के आधार पर कबीदास की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। **15**

अथवा

जायसी का जीवन परिचय देते हुए गोरा–बादल युद्ध खण्ड का सार लिखिए।

IV. सूरदास के पठित पदों के आधार पर उनकी वात्सल्य भावना का वर्णन कीजिए। **15**

अथवा

किन्हीं **दो पर** टीप्पणियाँ लिखिए।

अ) जनक फुलवारी प्रसंग

आ) बिहारीलाल का जीवन वृत

इ) भरतचरित

ई) समाज सुधारक कबीर।

P.T.O.

SECTION – C

V. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(7½+7½=15)**

अ) बोलिलिये कपिनिकर बहोरी। सकल सुनहु विनती कछु मोरी।।
रामचरण–पंकज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू।।
धाबहु मरकट विकट बरूथा। आनहु विटप गिरिन्ह के यूथा।।
सुनि कपि भालु चले करि हूहा। जय रघुवीर प्रताप समूहा।।

आ) अतिबल मधुकैटभ जिन मारे। महावीर दितिसुस संहारे।।
जेइ बलि बाँधि सहसभुजमारा। सोइ अवतरेउ हरण महिभारा।।
तासु विरोध न कीजिय नाथा। काल करम गुण जिनके हाथा।।

इ) साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया।।
रिपुकर रूप सकल तैं गावा। अति विशाल भय मोहि सुनावा।।
सो सब प्रिया सहज वश मोरे। समुझि परा प्रसाद अब तोरे।।
जानेउ प्रिया तोरि चतुराई। इहिमिस कहेहु मोरि प्रभुताई।।

ई) जनि जल्पसि जड जंतु कपि, शठ विलोकभम बाहु।
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राह।।

VI. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(7½+7½=15)**

अ) चलन चलन सबको कहतं है
नां जानौं बैकुंठ कहा है।
जोवन एक प्रमिति नहिं जानैं,
बातनि हैं बैकुंठ बखानै।
जब लग है बैकुंठ की आसा,
तब लग नहिं हरि चरन निवास।।

आ) सहित सनेह सकोच सुख, स्वेद कम्प मुसकानि।
प्रान पानि करि आपने, पान घरे मो पानि।।
नेकु न जानी परत यों, पट्यो विरह तन छाम।
उठति दीया लौ नादि हरि, लिये तिहारो नाम।।

ई) चरन–कमल बंदौं हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंधै, अंधे को सब कछु दरसाई।
बहिरो सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बन्दौ तेहि पाई।।

ई) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई पर, स्याम हरित दुति होइ।।
चिर जीवौं, जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँम्भीर।
को घटि ए वृषभानुजा, वै हलधर के वीर।।